बिछरो तेरो वल्लभा, सो क्यों सहे सुहागिन।
तुम बिना पिंड ब्रह्मांड, हो गई सब अगिन।।। २ ।।

हे मेरे धनी! आपकी अंगना आपका वियोग कैसे सहन करे? आपके बिना तो यह तन और ब्रह्माण्ड आग के समान हो गया है।

विरहा जाने विरहनी, वाके आग ना अंदर समाए।
सो झालां बाहेर पड़ी, तिन दियो वैराट लगाए।। ३ ।।

इस विरह के दुःख को विरहिणी ही जानती है। उसको फिर दुनियां के दुःख नहीं सताते। विरह की अग्नि की लपटों से सारा तन जल रहा है।

विरहा ना छूटे वल्लभा, जो पड़े विघन अनेक।
पिंड ना देखो ब्रह्मांड, देखों दुलहा अपनो एक।। ४ ।।

हे धनी! कितने भी माया के सुख आड़े आएं, आपका विरह छूटता नहीं है। मुझे तो केवल मेरे दूल्हा दिखते हैं। तन और संसार कोई दिखाई नहीं देता अर्थात् किसी की तरफ ध्यान ही नहीं जाता।

विरहनी विरहा बीच में, कियो सो अपनों घर।
चौदे तबक की साहेबी, सो वारूं तेरे विरहा पर।। ५ ।।

हे धनी! तेरी विरहिणी ने तो अपना घर ही विरह को बना लिया है। अब चौदह लोकों की साहिबी भी मैं आपके विरह पर कुर्बान कर दूंगी।

आंधी आई विरह की, तिन दियो ब्रह्मांड उड़ाए।
विरहिन गिरी सो उठ ना सकी, मूल अकूंर रही भराए।। ६ ।।

आपका विरह आंधी की तरह आया जिससे मेरे तन की शक्ति समाप्त हो गई। आपके विरह में ऐसी-ऐसी बातें हो गईं कि उससे उठा ही नहीं गया। अब तो परमधाम का मूल अंकुर ही चित्त में रह गया है।

विरहा सागर होए रह्या, बीच मीन विरहनी नार।
दौड़त हों निसवासर, कहूं बेट ना पाऊं पार।। ७ ।।

अब आपका यह विरह सागर के समान हो गया है जिसमें आपकी अंगना मछली की तरह तड़प रही है। सहारे के लिए रात-दिन दौड़ती है, किन्तु विरह के सागर में कोई सहारा नहीं मिल रहा है (अर्थात् जब आप मिलें तो विरह हटे और सहारा मिले)।

॥ प्रकरण ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ १३७ ॥

राग सोख मलार

इस्क बड़ा रे सबन में, ना कोई इस्क समान।
एक तेरे इस्क बिना, उड़ गई सब जहान।। १ ।।

हे मेरे धनी! अब आपके इश्क की याद आती है। यह इश्क सबसे बड़ा है और इसके समान कुछ भी नहीं है। एक आपके इश्क के बिना मेरी दुनियां ही उजड़ गई है।

Nijanand App

चौदे तबक हिसाब में, हिसाब निरंजन सुंन।
न्यारा इस्क हिसाब थें, जिन देख्या पिउ वतन।।२।।

चौदह लोकों का ब्रह्माण्ड, शून्य और निरंजन का किसी तरह से हिसाब किया जा सकता है, परन्तु जिस इश्क से घर और प्रीतम की पहचान हुई है उसका हिसाब नहीं हो सकता।

लोक अलोक हिसाब में, हिसाब जो हद बेहद।
न्यारा इस्क जो पिउ का, जिन किया आद लों रद।।३।।

इस संसार के सभी लोकों का तथा हद-बेहद का तो किसी तरह लेखा-जोखा हो सकता है, परन्तु धनी के इश्क के सामने मैंने सब कुछ रद्द कर दिया।

एक अनेक हिसाब में, और निराकार निरगुन।
न्यारा इस्क हिसाब थें, जो कछू ना देखे तुम बिन।।४।।

आदि नारायण तथा अनेक देवी-देवता और निराकार, निर्गुण तक का हिसाब किया जा सकता है, परन्तु आपके वियोग में जो इश्क आता है उसका वर्णन नहीं हो सकता।

और इस्क कोई जिन कथो, इस्कें ना पोहोंच्या कोए।
इस्क तहां जाए पोहोंचिया, जहां सुन्य सब्द ना होए।।५।।

इसलिए महामतिजी कहती हैं कि इश्क तक कोई पहुंचा ही नहीं। इश्क का नाम ही मत लेना। इश्क की पहुंच बहुत ऊंची है, जहां शून्य के शब्द भी नहीं पहुंच सकते।

नाहीं कथनी इस्क की, और कोई कथियो जिन।
इस्क तो आगे चल गया, सब्द समाना सुंन।।६।।

इश्क की कोई कहानी नहीं है, इसलिए कोई कहना मत। इश्क तो शून्य मण्डल से आगे गया है और तुम्हारे शब्द शून्य तक के ही हैं और शून्य में ही समा गए।

सब्द जो सूकया अंग में, हले नहीं हाथ पाए।
इस्क बेसुध न करे, रही अंदर बिलखाए।।७।।

इश्क के शब्द तो अंग में सूख जाते हैं और हाथ-पाव भी नहीं चलते, परन्तु जो सच्चा इश्क है वह बेसुध नहीं करता और सुध में प्रीतम की याद में अन्दर ही अन्दर विरहिणी को बिलखाता है।

पांपण पल न लेवही, दसो दिस नैन फिराऊं।
देह बिना दौड़ो अंदर, पिया कित मिलसी कहां जाऊं।।८।।

ऐसी विरहिणी अपनी आंखों की पलक तक नहीं लगाती। वह दसों दिशाओं में तरसती नजर से देखती है कि पिया कहां मिलेंगे? कहां जाऊं? यह विचारधारा उसके हृदय में दौड़ती रहती है। उसे तन की सुध नहीं रहती है।

इस्क को ए लछन, जो नैनों पलक न ले।
दौड़े फिरे न मिल सके, अंदर नजर पिया में दे।।९।।

इश्क का यह लक्षण है कि विरहिणी अपनी आंखों के पलक भी न झपकाये और न कहीं आये-जाये और न किसी से मिले। उसकी अन्दर की दृष्टि पिया में लगी रहती है।

Nijanand App

नजरों निमख न छूटहीं, तो नाहीं लागत पल।
अंदर तो न्यारा नहीं, पर जाए न दाह बिना मिल।। १० ।।

उसकी नजर पिया से नहीं छूटती, इसलिए पलक नहीं लगाती। विरहिणी को प्रीतम अन्दर से मिले होते हैं, परन्तु जब तक बाहर से न मिलें तब तक विरह की अग्नि बुझती नहीं।

जो दुख तुमहीं विछुरे, मोहे लाग्यो जो तासों प्यार।
एता सुख तेरे विरह में, तो कौन सुख होसी विहार।। ११ ।।

हे धनी! आपके बिछुड़ने से मुझे विरह का जो दुःख हुआ है, वह मुझे बहुत प्यारा हो गया है, क्योंकि आप मेरे चित्त से हटते ही नहीं। इतना सुख जब आपके विरह में है तो आपके मिलन में कितना सुख होगा।

॥ प्रकरण ॥ ७ ॥ चौपाई ॥ १४८ ॥

राग श्री धना काफी

सनमंध मूल को, मैं तो पाव पल छोड़्यो न जाए।
अब छल बल मोहे कहा करे, मोह आद थें दियो उड़ाए।। १ ।।

हे धनी! मेरा और आपका सम्बन्ध परमधाम का है। ऐसा जानकर अब चौथाई पल के लिए भी छोड़ा नहीं जाता। आपने मेरी अज्ञानता की नींद (मोह) आदि (जड़) से उड़ा दी है। अब यह माया की ताकत मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकती।

दरद जो तेरे दुलहा, कर डारयो सब नास।
पर आस न छोड़े जीव को, करने तुम विलास।। २ ।।

हे मेरे धनी! आपके इस विरह के दर्द ने मेरा सब कुछ नष्ट कर दिया, परन्तु मेरे जीव को आपके साथ मिलकर आनन्द करने की आशा लगी है।

विरहा न छोड़े जीव को, जीव आस भी पिउ मिलन।
पिया संग इन अंगे करूं, तो मैं सुहागिन।। ३ ।।

यह आपके बिछुड़ने का विरह मेरे जीव को छोड़ नहीं रहा और जीव को भी आपसे मिलने की आशा लगी है। मैं इस तन से आपसे मिलूं तभी मैं सुहागिनी कहलाऊंगी।

लागी लड़ाई आप में, एक विरहा दूजी आस।
ए भी विरहा पिउ का, आस भी पिउ विलास।। ४ ।।

मेरे अन्दर एक आपके बिछुड़ने का विरह और दूसरा आपसे मिलने की आशा—इन दोनों की आपस में लड़ाई होने लगी है। विरह भी आपका है और आपसे मिलकर विलास की चाह भी आपकी है।

मैं कहावत हों सुहागनी, जो विरहा न देऊं जिउ।
तो पीछे वतन जाए के, क्यों देखाऊं मुख पिउ।। ५ ।।

मैं सुहागिनी अंगना कहलाती हूं। आपके वियोग में यदि न तड़पूं तो पीछे घर में जाकर मुख कैसे दिखाऊंगी?

Nijanand App